IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# थार के रेगिस्तान में ऊंट की भूमिका, नस्लें उसकी कमी के कारण एवम् उपाय (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

Akha Ram
Assistant professor Govt.College Batadu(Geography Department)

सार:-

ऊंट थार रेगिस्तान जैसे क्षेत्रों में, अपनी सहनशक्ति और माल ढोने की क्षमता के कारण, "रेगिस्तान का जहाज" कहलाते हैं। ऊँट शुष्क भूमि के लिए पूरी तरह से अनुकूलित हैं। यह एक बहुमुखी जानवर है जो रेगिस्तानी वातावरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके शारीरिक अनुकूलन, सामाजिक व्यवहार, और मानव उपयोग जैसे पहलू शामिल हैं। ऊंटों न केवल जीव विज्ञान के लिए, बल्कि मानव संस्कृति और इतिहास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

प्रस्तावना:-

उनकी बड़ी, हिरण जैसी आँखें लंबी घुंघराले पलकों की दोहरी पंक्ति और तीसरी, स्पष्ट पलक द्वारा सुरक्षित होती हैं जो उनकी आँखों को उड़ती रेत और धूल से बचाती हैं। उनके कान बालों से भरे होते हैं, और उनके पास बंद करने योग्य नथुने होते हैं जिन्हें वे रेत के तूफ़ान के दौरान बंद कर सकते हैं। प्रत्येक पैर में दो चौड़े, सपाट पंजे होते हैं जो प्रत्येक पैर के ज़मीन पर पड़ने पर फैल जाते हैं, जिससे वे रेत में धंसने से बच जाते हैं। ऊँट लंबे समय तक बिना भोजन और पानी के जीवित रह सकते हैं। एक लदा हुआ ऊँट कभी-कभी लगभग दो सप्ताह तक बिना पानी पिए रह सकता है। फिर भी, जब भी उन्हें पानी उपलब्ध होता है, तो वे एक बार में 32 गैलन तक पानी पी सकते हैं!रेगिस्तान में ऊँट लगभग हर तरह की वनस्पति खा सकता है जो उसके सामने आती है। रेगिस्तान में, वे नमक की झाड़ियों, चारे, पत्ते और सूखी घास जैसे कठोर रेगिस्तानी पौधों पर पनपते हैं। थार रेगिस्तान में उनके पसंदीदा चारे के पेड़ों में खेजड़ी, बबूल और नीम शामिल हैं। उनके मोटे, सख्त होंठ काँटों को भी झेल सकते हैं।

मुख्यशब्द:-

रेगिस्तान,चरागाह,मधुमेह,स्वास्थ्यप्रद दूधों,आजीविका,नस्लें,चिकित्सा सुविधाएं,संरक्षण।

थार रेगिस्तान में ऊँट की भूमिका :-

भारत के लगभग 80 प्रतिशत ऊँट राजस्थान में रहते हैं। आश्चर्य की बात नहीं है कि ऊँट को 2014 में राज्य का पशु घोषित किया गया था।राजस्थान के ऊँट स्थानीय लोगों के लिए बहुत ज़रूरी थे, उन्हें बोझा ढोने, माल ढोने, पानी ढोने, हल चलाने और गाड़ियाँ खींचने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। खानाबदोश लोग ऊँटों को उनके दूध और मांस के लिए रखते थे और उन्हें चरागाह की तलाश में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में ले जाने में मदद करते थे। ऊँट का दूध वास्तव में सबसे स्वास्थ्यप्रद दूधों में से एक है, क्योंकि इसमें गाय के दूध की तुलना में संतृप्त वसा और लैक्टोज कम होता है और इसमें अधिक पोषक तत्व होते हैं। पोषण विशेषज्ञों का कहना है कि ऊँट के दूध में व्यक्ति की प्रतिरक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने और रक्त परिसंचरण को उत्तेजित करने की क्षमता होती है, और यह मधुमेह के लिए बेहतर है। इसके अलावा, परिवहन के साथ-साथ, ऊँट चमड़े या ऊन से बने उत्पाद भी देते हैं। ऊन का उपयोग कालीन, कंबल और खाट बनाने में किया जाता है। और मृत्यु के बाद, उनकी खाल का उपयोग चमड़े के लिए किया जा सकता है, जो जैसलमेर में स्थानीय हस्तशिल्प के लिए लोकप्रिय है। ऊँट की खाल बेहद सख्त और टिकाऊ होती है और जिस तरह से इसका उपचार किया जाता है, वह इसे हल्का बनाता है। कुछ रेगिस्तानी निवासी अभी भी पारंपरिक ऊँट के चमड़े की बोरी का उपयोग करते हैं जिसका उपयोग पहले के समय में पानी ले जाने के लिए किया जाता था। और आज, हस्तशिल्प में ऊँट के चमड़े का उपयोग न केवल जूते, बैग और बेल्ट के लिए किया जाता है, बल्कि फ़ोल्डर, टोपी और फ़ोन कवर भी बनाए जाते हैं। यहाँ तक कि ऊँट की हड्डियों का उपयोग स्थानीय कारीगरी के काम के लिए किया जाता है, जो हाथीदांत का अधिक टिकाऊ विकल्प है। ये सभी चीज़ें स्थानीय लोगों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।आज, थार रेगिस्तान में ऊँटों का उपयोग मुख्य रूप से सफारी और सवारी के लिए किया जाता है। कई स्थानीय लोग अभी भी ऊँट पालन और पालन-पोषण से अपनी आजीविका कमाते हैं। इसलिए ऊँटों ने सदियों से इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और विरासत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आज भी यह भूमिका निभा रहे हैं।

ऊँट का खानपान: -

ऊँट एक शाकाहारी जानवर है जो मुख्य रूप से घास, पत्ते, टहनियाँ, और रेगिस्तानी पौधों को खाता है। वे अनाज, गेहूं, और जई भी खाते हैं। ऊँट के मांस और दूध का उपयोग पारंपरिक रूप से भोजन के रूप में किया जाता है, खासकर रेगिस्तानी क्षेत्रों में।

राजस्थान में पाई जाने वाली प्रमुख ऊंटों की नस्लें: -

राजस्थान में ऊंटों की कई नस्लें पाई जाती हैं, जिनमें से कुछ मुख्य हैं: बीकानेरी, जैसलमेरी, गोमठ, और नचना. ये नस्लें अपनी अलग-अलग विशेषताओं के लिए जानी जाती हैं, जैसे कि बोझा ढोने, सवारी करने, और दौड़ने के लिए।

✓बीकानेरी:यह नस्ल राजस्थान में सबसे अधिक पाई जाती है और बोझा ढोने के लिए प्रसिद्ध है।
✓जैसलमेरी: यह नस्ल अपनी गति और सहनशक्ति के लिए जानी जाती है, और रेतीले इलाकों में दौड़ने और सवारी करने के लिए उपयुक्त हैं।
✓गोमठ:यह नस्ल सवारी के लिए प्रसिद्ध है, और जोधपुर जिले के फलोदी तहसील में पाई जाती है।

✓नचना:यह नस्ल अपनी तेज गति के लिए जानी जाती है और दौड़ने के लिए उपयुक्त है।
✓मेवाती:यह नस्ल भी राजस्थान में पाई जाती है।
✓मालवी:यह नस्ल मध्य प्रदेश से है, लेकिन राजस्थान में भी पाई जाती है।

राजस्थान में ऊटो की घटती संख्या के कारण:-

राजस्थान में ऊंटों की संख्या में कमी के कई कारण हैं, जिनमें मुख्य रूप से ऊंटों का आर्थिक महत्व घटना, चरागाहों की कमी, और तस्करी शामिल हैं।
✓आर्थिक महत्व घटना:
कृषि और परिवहन में ऊंटों का उपयोग कम हो गया है, जिससे उनकी उपयोगिता घट गई है।
✓चरागाहों की कमी:
बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के कारण चरागाह भूमि कम हो रही है, जिससे ऊंटों के लिए चारे की उपलब्धता कम हो गई है।
✓तस्करी:
ऊंटों को बांग्लादेश और अन्य देशों में मांस और चमड़े के लिए तस्करी किया जाता है।
✓सरकारी नीतियां:
ऊंट संरक्षण और विकास नीतियों के बावजूद, ऊंटों की संख्या में कमी जारी है।
पशुपालकों को प्रोत्साहन की कमी:
पशुपालकों को ऊंट पालन के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है, जिससे वे ऊंट पालने से कतरा रहे हैं।
✓सर्रा रोग:
ऊंटों में सर्रा रोग (Tybarsa या Galtya) भी उनकी संख्या में कमी का एक कारण है।
✓युवा पीढ़ी की रुचि में कमी:
ऊंट पालन में युवा पीढ़ी की रुचि कम हो रही है, जिससे ऊंटों की संख्या में और कमी आ सकती है।

ऊंटों की संख्या में कमी को दूर करने के उपाय:-

राजस्थान में ऊंटों की संख्या में कमी को रोकने के लिए, सरकार और स्थानीय लोगों दोनों को मिलकर प्रयास करने होंगे। सरकार को ऊंटों के संरक्षण और संवर्धन के लिए योजनाएं बनानी चाहिए और उनका प्रभावी क्रियान्वयन करना चाहिए, जबकि स्थानीय लोगों को ऊंटों के महत्व को समझना होगा और उनके संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभानी होगी।
✓सरकारी उपाय
(1)ऊंट संरक्षण योजना:
सरकार को "ऊंट संरक्षण योजना" को प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए, जिसमें ऊंटों के प्रजनन, स्वास्थ्य और चारे की व्यवस्था पर ध्यान दिया जाए।
(2)आर्थिक सहायता:
ऊंट पालकों को आर्थिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए, जैसे कि ऊंटनी के बच्चे (टोडिया) के पालन-पोषण के लिए अनुदान, ताकि वे ऊंट पालन को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित हों।

(3)चिकित्सा सुविधाएं:

ऊंटों के लिए बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए, जिसमें नियमित स्वास्थ्य जांच और बीमारियों का समय पर उपचार शामिल है।

(4)जागरूकता अभियान:

ऊंटों के महत्व और संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान चलाने चाहिए।

(5)पर्यटन को बढ़ावा:

पर्यटन में ऊंटों का उपयोग करके, जैसे कि ऊंट सफारी, उनकी उपयोगिता को बढ़ाया जा सकता है और इससे ऊंट पालकों की आय भी बढ़ सकती है।

(6)चरागाहों का विकास:

ऊंटों के लिए चरागाहों का विकास करना चाहिए ताकि उन्हें पर्याप्त चारा मिल सके।

(7)अनुसंधान:

ऊंटों के संरक्षण और संवर्धन के लिए अनुसंधान को बढ़ावा देना चाहिए।

✓स्थानीय लोगों के उपाय:

(1)ऊंटों का संरक्षण:

स्थानीय लोगों को ऊंटों को पालतू जानवर के रूप में स्वीकार करना चाहिए और उनके साथ प्रेम और सम्मान का व्यवहार करना चाहिए।

(2)ऊन और दूध का उपयोग:

ऊंटों के ऊन और दूध का उपयोग करके, उनकी उपयोगिता को बढ़ाया जा सकता है और इससे ऊंट पालकों को आर्थिक लाभ भी होगा।

(3)ऊंटों के प्रति जागरूकता:

स्थानीय लोगों को ऊंटों के महत्व और संरक्षण के बारे में जागरूक होना चाहिए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

(4)ऊंटों के लिए चारे की व्यवस्था:

स्थानीय लोगों को ऊंटों के लिए चारे की व्यवस्था करने में सहयोग करना चाहिए, खासकर सूखे के मौसम में।

(5)ऊंटों के प्रति नकारात्मक सोच को बदलना:

ऊंटों के प्रति नकारात्मक सोच को बदलना होगा और उन्हें रेगिस्तान का जहाज मानने की मानसिकता को बढ़ावा देना होगा।

इन उपायों को सामूहिक रूप से लागू करके, राजस्थान में ऊंटों की संख्या में कमी को रोका जा सकता है और उनके संरक्षण को सुनिश्चित किया जा सकता है।

निष्कर्ष:-

राजस्थान में ऊंटों की संख्या में कमी एक गंभीर समस्या है जिसके कई कारण हैं। सरकार और पशुपालकों को मिलकर इस समस्या का समाधान ढूंढना होगा ताकि इस "रेगिस्तान के जहाज" को बचाया जा सके। राजस्थान में ऊंटों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। वे न केवल रेगिस्तानी इलाकों में परिवहन का एक महत्वपूर्ण साधन हैं, बल्कि कृषि, पर्यटन और संस्कृति में भी एक अभिन्न अंग हैं। हालांकि, हाल के वर्षों में ऊंटों की संख्या में गिरावट आई है, जिसके संरक्षण के प्रयास किए जा रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ: -

(1)राजस्थान की पशुपालन संस्कृति: -राजस्थान ग्रन्थ अकादमी

(2) राजस्थान अध्ययन : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान

(3)राजस्थान पशुपालन : - चंद्रेश अग्रवाल

(4)राजस्थान सामान्य ज्ञान :-अथर्व प्रकाशन, आरपीएच संपादकीय बोर्ड

(5)विकिपीडिया